अध्याय
05

नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया

© JCERT not to be republished

परिचय–चपला देवी।

लेखिका परिचय-चपला देवी।

लेखिका परिचय

- चपला देवी द्विवेदी युग की लेखिका है। वे अपने समय के गुमनाम लेखिकाओं में से हैं।
- उनका जीवन परिचय अभी तक अनुपलब्ध है। उनका साहित्य अपने युग के संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।
- उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के अनछुए पहलू को जिस प्रकार से अपने साहित्य में अभिव्यक्ति दी है उससे उनका राष्ट्रप्रेम एवं निर्भीकता स्पष्ट रूप से प्रकट होती है।
- प्रस्तुत पाठ 'नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया' प्रारंभिक गद्य का अनोखा उदाहरण है। इसे हम प्रारंभिक 'रिपोर्ताज' कह सकते हैं।
- भाषा के दृष्टिकोण से लेखिका ने संस्कृतनिष्ठ शब्दावली को प्रमुखता से अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। जैसे- "अर्धरात्रि के समय चाँदनी में एक बालिका स्वच्छ उज्ज्वल वस्त्र पहने हुए नाना साहब के भग्नावशिष्ट प्रासाद के ढेर पर बैठी रो रही थी।"
- संस्कृत के अलावा उनकी भाषा में उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्द भी यदा-कदा देखने को मिल जाते हैं। उनके लेखन में पाठकों को भावांदोलित करने की अद्भुत क्षमता है।
- देवी मैना के चरित्र को उजागर करने वाली घटना, मुख्य रूप से स्वाधीनता-संग्राम में अंग्रेजों के भारतीयों पर अत्याचार का जीता-जागता प्रमाण है।इसे पढ़कर स्वतंत्रता-संग्राम के दीवानों के प्रयास की झांकी आंखों के सामने साकार हो उठती है।

© JCERT not to be republished

पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ 'हिन्दू पंच' के 'बलिदान' अंक से लिया गया है। इसमें लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि किस प्रकार से एक छोटी सी बच्ची ने मातृभूमि की बलिवेदी पर अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। 1857 ईस्वी की क्रांति की असफलता के बाद नाना साहब ने कानपुर छोड़ दिया, दुर्भाग्यवश वह अपनी पुत्री मैना को अपने साथ न ले जा सके। अंग्रेजों ने नाना को मुख्य षड्यंत्रकारी समझ उनकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली और उनके महल को तोपों से उड़ाने का आदेश सेनापति 'हे' को दे दिया।

उसी समय नाना की पुत्री मैना सेनापति 'हे' से उनकी बेटी 'मेरी' से अपने संबंधों के आधार पर महल को नही तोड़ने का निवेदन करती है। सेनापति 'हे' उसको आश्वासन देते हैं की वैसे तो सरकारी आदेश का पालन करना ही मेरा दायित्व है फिर भी तुम्हारे अनुरोध को उच्च अधिकारियों के समक्ष रखेंगे। इस सन्दर्भ में 'हे' की मदद के लिए जनरल आउटरम साफ़ इंकार कर देता है और तुरंत ही महल को नष्ट करने का आदेश देते हुए मैना को पकड़ने की आज्ञा देता है। परन्तु लाख कोशिशों के बाद भी मैना किसी को नहीं मिलती है।

उसी दिन शाम को लन्दन से एक तार आता है जिसमे यह उल्लेख है कि मंत्रिमंडल के निर्णयानुसार नाना का सब कुछ बर्बाद कर दिया जाये। इस आदेश के उपरांत जनरल आउटरम के द्वारा महल को उडा दिया जाता है। उसी समय लन्दन के प्रसिद्ध 'टाइम्स' पत्र के 6 सितम्बर के लेख में नाना के अब तक नहीं पकडे जाने के प्रति रोष प्रकट किया जाता है। और जनरल 'हे' के मैना को छोड़ देने के प्रस्ताव का विरोध किया जाता है और जनरल 'हे' पर चारित्रिक हीनता का आरोप लगाकर उनके सामने ही मैना को फाँसी लगाने के लिए कहा जाता है।

सन 57 सितम्बर कि अर्धरात्रि में मैना अपने टूटे हुए महल के पास रोते हुए जनरल आउटरम द्वारा गिरफ्तार कर ली जाती है। उसकी अंतिम इच्छा अपने महल के सामने जी भर के रोने की पूर्ति भी नहीं की जाती। उसी समय महाराष्ट्रीय इतिहासवेत्ता चिटनिस के पत्र 'वाखर' में यह प्रकाशित होता है कि कानपुर के किले में नाना साहब की एकमात्र कन्या 'मैना' को महल की दहकती हुई आग में भस्म कर दिया गया।

शब्दार्थ

निरपराध - बिना अपराध के। वासस्थान - निवास स्थान, रहने की जगह। विध्वंस - विनाश करना। फाटक - दरवाजा। भग्नावशिष्ट - अवशेष। प्रासाद - महल। पाषाण हृदय - पत्थर के सामान कठोर हृदय। भीषण - भयावह, डरावना। शस्त्र - हथियार। अल्पव्यस्क - कम उम्र, कमसिन। इतिहासवेत्ता - इतिहास का जानकार।

© JCERT not to be republished

प्रश्न –अभ्यास

1. बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को कौन-कौन से तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया ?

उत्तर- पहला तर्क मैना ने यह दिया कि मकान जड़ वस्तु है, इसने कोई अपराध नही किया। आप अपराधी को पकड़िए उसको सजा दीजिये महल को नहीं। दूसरा यह कि चूंकि मैने अपना सारा जीवन इस महल में गुजारा है अतः इससे मेरी यादें जुड़ी हुई हैं। तीसरा यह कि आपकी पुत्री 'मेरी' के साथ मेरा मित्रता का संबंध था और आपका भी इस महल में आना जाना होता रहता था। इसी कारण से आप महल को नहीं नष्ट करके असली अपराधी को पकड़कर सजा दीजिये।

2. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती थी पर अंग्रेज उसे नष्ट करना चाहते थे। क्यों ?

उत्तर- मैना उस महल को इसलिए बचाना चाहती थी क्योंकि उसका पालन-पोषण उसी मकान में हुआ। उस महल से उसकी खट्टी-मीठी यादें जुड़ी हुई थी।

और अंग्रेज इसलिए उस महल को तोड़ना चाहते थे क्योंकि वह महल 1857 की क्रांति के प्रमुख विद्रोही नेता नाना साहब का था। नाना ने अंग्रेज सरकार को बहुत हानि पहुंचाई थी तथा अंग्रेज नर-नारियों की हत्या का उन्हें दोषी माना गया था।

3. सर टामस 'हे' के मैना के प्रति दया के क्या कारण थे ?

उत्तर- सर टॉमस 'हे' का मैना पर दया दिखाने का सर्वप्रमुख कारण मैना का करुण मुख और उसकी वाक्पटुता थी। साथ ही वह उनकी पुत्री मेरी की सहेली भी थी। स्वयं जनरल 'हे' का भी उसके घर में आना जाना होता था और उस परिवार से उनके मधुर संबंध थे।

4. मैना की अंतिम इच्छा थी किवह उस प्रासाद के ढेर पर बैठकर जी भरकर रो ले लेकिन पाषाण हृदय वाले जनरल ने किस भय से उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी ?

उत्तर- जनरल आउटरम को यह भय था कि वह सरकारी सेवक था। सरकारी आदेश की अवहेलना के कारण उसे सजा हो सकती थी। उसे यह भी डर था कि कहीं उसके रोने से द्रवित होकर आम जनता इकट्ठी होकर फिर से अंग्रेज सरकार के खिलाफ बगावत न कर दे। यही कारण है कि वह मैना की इच्छापूर्ति कर के अपने अधिकारियों के कोपभाजन का शिकार नहीं बनना चाहता था।

5. बालिका मैना के चरित्र की कौन-कौन सी विशेषताएं आप अपनाना चाहेंगे और क्यों ?

उत्तर- हम मैना के चरित्र से साहस, धैर्य, गंभीरता, वाक्चातुर्य आदि विशेषताओं को अपने जीवन में अपनाना चाहेंगे। क्योंकि इन्हीं गुणों के कारण एक नन्ही सी बालिका मैना अंग्रेज सरकार के सामने एक पर्वत की तरह अविचल भाव से खड़ी रही।

6. 'टाइम्स' पत्र ने 6 सितंबर को लिखा था- 'बड़े दुख का विषय है कि भारत सरकार आज तक उस दुर्दांत नाना साहब को नहीं पकड़ सकी'। इस वाक्य में 'भारत सरकार'से क्या आशय है?

उत्तर:-इस वाक्य में' भारत सरकार' से आशय-तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के अधीन भारत से है।क्योंकि उस समय हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था और वही लोग इस देश के नीति नियंता थे।

© JCERT not to be republished